# हिन्द व पाक में प्रकाशित क़ुरआन मजीद के नुस्खे

क़ुरआन मजीद अल्लाह की ओर से उतारी जाने वाली अन्तिम किताब है और क़यामत तक मानवता का मार्ग दर्शन इसी किताब से संबंधित है। अल्लाह ने स्वयं इसकी सुरक्षा का ज़िम्मा लिया है और न केवल क़ारियों, हाफ़िज़ों द्वारा इसकी रक्षा की गयी है बल्कि मतन क़ुरआन को जिस प्रकार आपने इमला (बोल कर लिखवाना) कराया और लिखवाया वह तरीक़ा किताबत भी रस्मे उसमानी की सूरत में सुरक्षित है। अरबी और ग़ैर अरबी, पूर्वी और पश्चिमी देशों में इसी तरह क़ुरआन मजीद की किताबत होती आयी है। अलबत्ता असल शब्दों से हटकर तिलावत (पढ़ने की) की आसानी के लिए जो रमूज़ (नुक्ते) व अलामात आराब (मात्राएं) इस्तेमाल किए गए हैं उनमें थोड़ा बहुत फ़र्क़ पाया जाता है जिसका क़ुरआन मजीद के शब्दों और मतन की किताबत से संबंध नहीं, हिन्द व पाक में क़ुरआन मजीद की जिस तरह किताबत होती है वह इस कला की केन्द्रीय हस्ती शैख़ अबु उमर वालदानी (मृत्यु 444 हि0) की व्याख्याओं के अनुसार है। और हिन्दुस्तान के अत्यन्त विश्वसनीय उलमा, इफ़ता के माहिर और इस कला के माहिरों की पृष्टि व तसदीक़ के साथ इसके प्रकाशन का काम होता आया है। इस लिए इसमें परिवर्तन और अरब शहरों में प्रचलित अलामात व रमूज़ के अनुसार इसकी किताबत न केवल अनावश्यक अमल है बल्कि यह मुस्लिम समुदाय में फूट और बिखराव का कारण भी बन सकता है इस लिए मुस्लिम समुदाय में जो तरीक़ा प्रचलित रहा है कि विभिन्न इलाक़ों के लोग अपनी सुविधा के हिसाब से इस इलाक़े में प्रचलित रमूज़ के अनुसार क़ुरआन के प्रकाशन की सेवा अंजाम दिया करते हैं इसे उसी तरह रखा जाए और किसी भी ऐसे अमल से बचा जाए जो फितना व बिगाड़ का सबब बन सकता हो।

---

**नोटः** 24 वां फ़िक़्ही सेमिनार (ओचीरा, केरल) दिनांक 9-11 जमादिल ऊला 1436 हि0 - 1-3 मार्च 2015 ई0